परमेश्वर हमारे आत्मिक पिता के रूप में

हमने विश्लेषण किया है कि परमेश्वर को *अनादि* पिता (परमेश्वरत्व में), *विश्वव्यापी* पिता (सृष्टि में), और *चयनात्मक* पिता (अपनी प्रतिज्ञा/वाचा में) के रूप में कैसे देखा जा सकता है। अब हम *आत्मिक* पिता के रूप में परमेश्वर के काम का अध्ययन आरम्भ करेंगे।

जुदाई की समस्या

विश्वव्यापी पिता के रूप में, पाप द्वारा उस सम्बन्ध को बिगाड़ने तक परमेश्वर की मनुष्य के साथ संगति थी। आदम और हव्वा को अदन से निकालकर और जीवन के वृक्ष से दूर करके परमेश्वर ने अपनी मर्ज़ी पूरी नहीं की। जुदाई की यह स्थिति परमेश्वर के स्वभाव और उनके पापी होने के कारण थी। परमेश्वर पूर्णतया पवित्र है; उनमें पाप (अशुद्ध) आ गया था। एक बार पाप के आ जाने से, जुदाई अवश्य थी। इससे बचने की चेतावनी दी गई थी और बचे रहने के बाद एक प्रतिज्ञा थी (उत्पत्ति 2:17; 3:15)। उत्पत्ति 3 में हम पढ़ते हैं कि सबसे बुद्धिमान और प्रेम करने वाले परमेश्वर से *जुदाई* कैसे हुई। यह जुदाई अपने आप समाप्त होने वाली नहीं थी; यह तो पाप का एक निश्चित परिणाम था। पाप एक बाधा बना देता है जिसके ऊपर से हम कूद नहीं सकते (यशायाह 59:1, 2)। सच में, ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है'' (रोमियों 6:23क)। मनुष्य में पाप की उपस्थिति से निपटने के लिए परमेश्वर के ढंग को देखने पर पता चलता है कि युगों से यही सिद्धांत है।

प्रथम युग परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य की सृष्टि से आरम्भ हुआ था। जब तक उन्होंने पाप न किया तब तक यह युग बिना किसी रोक टोक के चलता रहा। सृष्टि और मनुष्य के पाप में गिरने के बीच के समय हम तुलनात्मक रूप से कम विचार करते हैं, शायद इसलिए क्योंकि इसे उत्पत्ति के पहले तीन अध्यायों में समेट दिया गया है। वास्तव में, मसीह के द्वितीय आगमन के समय की तरह हम अदन की वाटिका में उनके रहने के समय के बारे में भी बहुत कम जानते हैं–दोनों का एक ही कारण है। हमें बताया नहीं गया। उन्हें वाटिका से निकालने के बाद, परमेश्वर उनके भविष्य के प्रति चिन्तित रहा। परन्तु परमेश्वर और उसकी मानवीय सृष्टि के बीच की संगति का स्वभाव बदल गया। आदम और हव्वा के पाप करने से पहले, इस संगति में वे आमने सामने ''बातचीत'' करते थे। उनके पाप के बाद,

लोग परमेश्वर को भेंट चढ़ाने और उसका नाम लेने लगे (उत्पत्ति 4:3, 4, 26ख)। अन्य शब्दों में, पाप ने उन्हें दूर कर दिया था, पर परमेश्वर ने इस सम्बन्ध को समाप्त नहीं किया था। परमेश्वर मनुष्य जाति का विश्वव्यापी पिता बना रहा, पर उनके पापी होने के कारण परमेश्वर के साथ उनकी पूर्ण संगति के लिए यह सम्बन्ध पर्याप्त नहीं था।

तैयारी की प्रक्रिया

परमेश्वर द्वारा इस प्रतिज्ञा/वाचा के द्वारा चयनात्मक प्रक्रिया को आरम्भ करने का यह अर्थ नहीं था कि वह अब विश्वव्यापी पिता नहीं था। परन्तु उसका लगातार काम करते रहना दिखाता है कि उसने मनुष्य जाति को बचाने के लिए अपने विश्वव्यापी पिता होने को आधार नहीं बनाया। इसलिए उत्पत्ति 3:15 में अपनी प्रारम्भिक प्रतिज्ञा के आधार पर, वह मनुष्य जाति के साथ नूह से की प्रतिज्ञा और वाचा के द्वारा व्यवहार करने लगा:

> और सुन, मैं आप पृथ्वी पर जलप्रलय करके सब प्राणियों को, जिन में जीवन की आत्मा है, आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं: और सब जो पृथ्वी पर हैं मर जाएंगे। परन्तु तेरे संग मैं वाचा बान्धता हूं: इसलिए तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना (उत्पत्ति 6:17, 18)

> तब नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई; और सब शुद्ध पशुओं, और सब शुद्ध पक्षियों में से, कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया। इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, कि मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है सो बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूंगा (उत्पत्ति 8:20, 21)।

> फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा, सुनो, मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पश्चात् जो तुम्हारा वंश होगा उसके साथ भी वाचा बान्धता हूं। और सब जीवित प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं क्या पक्षी क्या घरेलू पशु, क्या पृथ्वी के सब बनैले पशु, पृथ्वी के जितने जीवजन्तु जहाज से निकले हैं; सब के साथ भी मेरी यह वाचा बन्धती है: और मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरा करूंगा; कि सब प्राणी फिर जलप्रलय से नाश न होंगे: और पृथ्वी के नाश करने के लिए फिर जल-प्रलय न होगा। फिर परमेश्वर ने कहा, जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग युग की पीढ़ियों के लिए बान्धता हूं; उसका यह चिह्न है: कि मैं ने बादल में अपना धनुष रखा है वह मेरे और पृथ्वी के बीच में वाचा का चिह्न होगा (उत्पत्ति 9:8-13)।

इस प्रतिज्ञा/वाचा का संकेत यह था कि परमेश्वर दोबारा कभी भी मनुष्य जाति का विनाश वैसे नहीं करेगा जैसे उसने प्रलय के समय किया था। इसलिए यह स्पष्ट है कि

परमेश्वर की ओर से उसकी सृष्टि को यह लाभ मनुष्यों के शारीरिक जीवन की बात थी। विश्वव्यापी परमेश्वर की ओर से यह एक बड़ी और अनुग्रहकारी वचनबद्धता थी। यह शुभ समाचार था अर्थात इसमें कोई शर्त नहीं थी। यह ''सदा के लिए'' है। आज हम आश्वस्त हो सकते हैं कि जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक परमेश्वर हमें कभी भी पूरी तरह से पानी के साथ वैसे नहीं मिटाएगा जैसे उसने प्रलय के उस विध्वंस में किया था। यद्यपि मनुष्य जाति का शारीरिक जीवन सर्वदा रहने वाला नहीं है, परन्तु यह एक ऐतिहासिक मंच बन गया जिस पर चयनात्मक पिता के रूप में परमेश्वर ने अपनी शानदार भूमिका आरम्भ करनी थी।

हम देखते हैं कि कुछ विशेष लोगों को चुनने में जिनके द्वारा उसने पाप से भरी मनुष्य जाति के उद्धार की अपनी ऐतिहासिक कहानी को आगे बढ़ाना था। यह प्रक्रिया अब्राहम [हिन्दी की पुरानी बाइबल में इसे इब्राहीम लिखा गया है] नामक एक इब्रानी से आरम्भ हुई।[1] परमेश्वर ने इब्राहीम को अपनी आशीष, एक ऊंचा नाम और देश देने की प्रतिज्ञा की। उसने यह प्रतिज्ञा भी की कि उसके द्वारा सभी जातियां आशीष पाएंगी या अपने आपको धन्य कहेंगी। यह बड़ी बहुपक्षीय प्रतिज्ञा वाचा के द्वारा मोहर की गई। इब्राहीम ने परमेश्वर में पूर्ण भरोसे से ये सभी उपकार पाए और परमेश्वर ने इब्राहीम के विश्वास को धार्मिकता गिना। यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि परमेश्वर की योजना ही थी कि अन्ततः, इब्राहीम के वंश के द्वारा, सभी जातियां आशीष पाएं।

इब्राहीम के वंशजों की गिनती लाखों में होने के बाद, उन्हें एक व्यवस्था दी गई थी। परमेश्वर के चुने हुए लोगों को सीनै पर्वत पर व्यवस्था दिए जाने के समय इस्राएली कहा जाता था। इब्राहीम के पौत्र याकूब का नाम बदलकर इस्राएल कर दिया गया था। उसके वंशजों जिन्हें सीनै पर्वत पर व्यवस्था मिली थी, इस्राएल के बारह गोत्र या इस्राएली कहा जाता था। सीनै से लेकर, मूसा के द्वारा इस्राएलियों को दी गई परमेश्वर की व्यवस्था, विशेष रूप से उनके लिए ही थी। चयनात्मक पिता के काम में यह दूसरा कदम था। वे उसके चुने हुए लोग थे अर्थात मूसा की व्यवस्था उनके लिए परमेश्वर की व्यवस्था थी। परमेश्वर ने उन्हें इसलिए नहीं चुना क्योंकि वे पृथ्वी के लोगों में ''विशेष'' लोग थे। बल्कि, यह तो उन्हें परमेश्वर द्वारा चुनने के कारण था कि वे उसके चुने हुए लोग बन गए जिनके द्वारा उसने उनके पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दी गई प्रतिज्ञा पूरी करनी थी (व्यवस्थाविवरण 9:4, 5)।

पुनः, हम उसकी प्रकट योजना की विशेषता पर ज़ोर देते हैं। यद्यपि उसे अब चयनात्मक पिता के रूप में देखा जाता है, परन्तु वह अपने आपको सबके लिए चिन्तित व्यक्ति के रूप में दिखाता है। सबके लिए इस चिन्ता को, चाहे परमेश्वर अपनी चयनात्मक प्रक्रिया को एक जाति के द्वारा पूरा कर रहा है, तीन प्रमुख क्षेत्रों से दिखाया जाता है।

पहला प्रमुख क्षेत्र व्यवस्था का है। तीन उदाहरण काफी होंगे। इस्राएली लोग अपने बीच रहने वाले विदेशियों पर दबाव या उनके साथ दुर्व्यवहार नहीं कर सकते थे (निर्गमन 22:21; 23:9; लैव्यवव्यवस्था 19:33)। दूसरा उदाहरण परोपकार का है। कटनी के समय उनके लिए निर्धनों और विदेशियों के लिए दाख पर कुछ अंगूर और जो कुछ भूमि पर गिरा

होता उसे छोड़ना आवश्यक था (लैव्यव्यवस्था 19:10)। तीसरा उदाहरण दिखाता है कि परमेश्वर सब लोगों की चिन्ता करता था और हर किसी से अपेक्षा करता था कि वह उसका भय माने।

> ''यहोवा के नाम की निन्दा करने वाला निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग निश्चय उसको पत्थरवाह करें; चाहे देशी हो चाहे परदेशी, यदि कोई उस नाम की निन्दा करे तो वह मार डाला जाए।''

> ''तुम्हारा नियम एक ही हो, जैसा देशी के लिए वैसा ही परदेशी के लिए भी हो; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं'' (लैव्यव्यवस्था 24:16, 22)।

दूसरा बड़ा क्षेत्र इतिहास है जिसमें हम सब लोगों के लिए परमेश्वर की चिन्ता को देखते हैं। बाइबल का हर पाठक योना की कहानी से परिचित है। जब हमें पढ़ना नहीं आता था तब भी हम में से बहुतों ने योना और उस बड़ी मछली के बारे में सुना था जो उसे निगल गई थी। वह आठवीं शताब्दी ई. पू. में नासरत के निकट एक गांव में रहता था। उस समय, यरोबाम द्वितीय इस्राएल का राजा था। परमेश्वर ने योना को अश्शूरी राज्य की राजधानी नीनवे में विनाश के संदेश का प्रचार करने भेजा था क्योंकि वहां के लोग बहुत बुरे हो गए थे। यद्यपि वह जाने से हिचकिचा रहा था, परन्तु अन्ततः उसने परमेश्वर की आज्ञा मानकर उस नगर में प्रचार किया। नीनवे के लोगों ने परमेश्वर के क्रोध से बचने के लिए मन फिराने की आवश्यकता को समझ लिया। उन्होंने मन फिराया और परमेश्वर से प्रार्थना की; इसलिए, उनके प्राण छोड़ दिए गए।

यह पहला क्षेत्र दिखाता है कि परमेश्वर ने उन लोगों की भलाई के लिए कैसे प्रबन्ध किया जो परमेश्वर की चुनी हुई जाति नहीं थे। वे स्वेच्छा से अपने आपको व्यवस्था के अधीन कर सकते थे, इसके नियमों को मान सकते थे और इसके लाभ ले सकते थे। ऐसा करके वे इस्राएल के परमेश्वर, याहवेह में विश्वास व्यक्त कर रहे थे।

दूसरा क्षेत्र दिखाता है कि जो लोग इस्राएलियों या इस्राएल में रहने वाले परदेशियों की तरह व्यवस्था के अधीन नहीं थे, उन्हें भी परमेश्वर ने आशा का संदेश दिया। अश्शूरी लोगों को छोड़ दिया गया क्योंकि उन्होंने परमेश्वर में विश्वास करके उसके वचन को ग्रहण कर लिया था (योना 3:5, 10)। यह भूल जाना आसान है कि पृथ्वी की बहुत बड़ी जनसंख्या जो युगों से थी, अश्शूरियों की तरह उसी श्रेणी में आती है। उन्हें परमेश्वर के सामने उतना ही हिसाब देना था जितना वे जानते थे। अन्य शब्दों में, ये लोग उस अन्यजाति जगत का भाग थे जिसकी बात पौलुस ने कही थी:

> फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था की बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और

उनकी चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं।) जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा (रोमियों 2:14-16; अधिक विस्तार के लिए, पढ़ें रोमियों 1:18-2:16)।

यह सच है कि विश्वव्यापी पिता और इब्रानियों का चयनात्मक पिता होने के कारण जिनके द्वारा उसने अपने अद्‌भुत काम किए, के रूप में परमेश्वर अपने मानवीय परिवार से प्रेम करता है।

तीसरा बड़ा क्षेत्र भविष्यवाणी है जिसमें हम सब लोगों के लिए परमेश्वर की चिन्ता देखते हैं। अपने चुने हुए लोगों की अगुआई करते हुए, परमेश्वर अपने वचन के द्वारा भविष्य के लिए धीरे-धीरे उनकी आंखें खोलने लगा। उसने लोगों के साथ अपनी प्रतिज्ञाओं को ठहराए हुए समयों पर पूरा किया था। *ये प्रतिज्ञाएं, जिन्हें वाचा के द्वारा औपचारिक रूप दिया गया था, अधिकतर अस्थाई और शर्तों के साथ थीं।* उनमें से अधिकतर अनन्तकालिक या अपरिवर्तनीय नहीं थीं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने इब्राहीम को ''इब्रानी जाति का पिता'' होना चुना था। उसकी यह पसन्द प्रतिज्ञा के द्वारा व्यक्त की गई थी (उत्पत्ति 12:1-3)। परन्तु इसके साथ शर्तें भी जुड़ी हुई थीं अर्थात एक वाचा का पालन करना आवश्यक था। ''फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, *तू भी मेरे साथ बांधी हुई वाचा का पालन करना;* तू और तेरे पश्चात तेरा वंश भी अपनी-अपनी पीढ़ी में उसका पालन करे'' (उत्पत्ति 17:9)। वाचा के चिह्न के रूप में खतना दिया गया था। इब्राहीम ने पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा किया। जब इब्राहीम अपने विश्वास पर खरा उतरा, तो परमेश्वर ने उससे कहा, ''पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: *क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है*'' (उत्पत्ति 22:18)।

मूसा की व्यवस्था, सीनै पर्वत से लेकर अपने लोगों के साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा/वाचा के सम्बन्ध का भाग थी। यह व्यवस्था के रूप में तो नहीं थी, परन्तु इसमें प्रतिज्ञाएं थीं। परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए ये प्रतिज्ञाएं अनन्त काल के लिए या बिना शर्त के नहीं थीं। उदाहरण के लिए, एक आज्ञा में यह सांसारिक प्रतिज्ञा थी: ''तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, *जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाए*'' (निर्गमन 20:12) बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। स्पष्ट रूप से समझने के लिए, आइए व्यवस्थाविवरण 26:16-30:20 में मिलने वाली वाचा की प्रस्तुति के विशाल दृश्यों की बात करते हैं। यहां पर हम परमेश्वर की ओर से प्रतिज्ञा/वाचा/व्यवस्था और उसके लोगों की ओर से भरोसा/आज्ञा मानने के सम्बन्ध को देखते हैं। इस सम्बन्ध को बनाए रखने में असफल रहने वालों के विनाश का भी पता चलता है। पुन:, इसमें इस्राएलियों को मिलने वाली अधिकतर आशिषों के सांसारिक होने पर ज़ोर दिया गया है।

ऊपर दिए गए सभी विचारों का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के लोग कब्र (मृत्यु) के बाद के जीवन या ''जीवन उपरान्त'' मिलने वाली परमेश्वर की आशिषों से पूरी तरह

अनभिज्ञ थे। फिर भी, यह जानकर हैरानी होती है कि इन धारणाओं को कितना कम व्यक्त किया जाता था, विशेषकर यदि कोई भविष्यवक्ताओं की बातों को न देखे।

हम राजा दाऊद को बतशेबा से उत्पन्न हुए अपने बीमार बच्चे के लिए प्रार्थना करते हुए देखते हैं। उस बच्चे के मरने के बाद, दाऊद ने परमेश्वर के भवन में जाकर आराधना की। उसके सहायक हैरान हो गए। उसने उन्हें समझाया कि, ''अब वह मर गया, फिर मैं उपवास क्यों करूं? क्या मैं उसे लौटा ला सकता हूं? *मैं तो उसके पास जाऊंगा,* परन्तु वह मेरे पास लौट न आएगा'' (2 शमूएल 12:23)। बेशक मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास का यह अखण्डनीय उदाहरण नहीं है, पर विभिन्न व्याख्याकर्त्ता इसे अखण्डनीय मानते हैं।[2]

भविष्यवाणी के लेखों के बाहर के अन्य कथनों को प्राय: मृत्यु के पश्चात जीवन की पुष्टियों के रूप में देखा जाता है (देखिए अय्यूब 14:7-14; भजन 16:9-11; 73:24-26)। मरने के बाद के जीवन का दावा करता एक स्पष्ट कथन है: ''परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक के वश से छुड़ा लेगा, क्योंकि वही मुझे ग्रहण कर अपनाएगा'' (भजन संहिता 49:15)।[3]

भविष्यवाणी के लोगों की ओर मुड़कर, हम दो कथनों पर ज़ोर देंगे। पहला कथन यशायाह 26:19 में मिलता है: ''तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसने वालो, जागकर जयजयकार करो! क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है, और पृथ्वी मुर्दों को लौटा देगी''। यह पद उस संदर्भ में है जो बाबुल की दासता से यहूदियों के छूटने और उनके अपने देश लौटने की बात करता है। उनके लिए, इसका अर्थ एक नई स्थिति, जीवन, स्वतन्त्रता और अपने परमेश्वर के मन्दिर में उसके साथ एक ताजा सम्बन्ध था। इस अद्‌भुत समाचार को शारीरिक पुनरुत्थान की समानता में प्रस्तुत किया गया था। हमें इस बात का अहसास है कि यदि पाठकों में पुनरुत्थान की अवधारणा न हो या वे पुनरुत्थान में विश्वास न करते हों, तो परमेश्वर के लोगों के फिर से जीवित होने की व्याख्या करने के लिए यशायाह द्वारा पुनरुत्थान की समानता बताने की अच्छी कोशिश व्यर्थ होनी थी और इसका बुरा परिणाम लोगों द्वारा इसका गलत अर्थ निकालकर गुमराह होना था। इसलिए समानता के द्वारा, शारीरिक पुनरुत्थान में हमारा इतना पक्का विश्वास है कि इस विश्वास के आधार पर आशा की जा सकती है। दूसरा हवाला दानिय्येल 12:2, 3 का है:

> उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान, जो तेरे जाति भाइयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा। तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों की नाईं प्रकाशमान रहेंगे।

इस पद में चार मुख्य शिक्षाओं पर ज़ोर दिया गया है: (1) बहुत से लोगों के लिए, पुनरुत्थान अनन्त जीवन का कारण होगा। (2) अन्यों के लिए, यह लज्जा और अनन्त दण्ड

का कारण होगा। (3) बुद्धिमान लोग स्वर्गीय सिंहासन में ''प्रकाशमान'' होंगे। (4) सुसमाचार का प्रचार करने वाले उनके साथ सदा-सदा तक जीवित रहेंगे जिन्हें उन्होंने धर्मी बनाया था।

बाइबल के रूढ़िवादी विद्वान मानते हैं कि यशायाह की पुस्तक आठवीं शताब्दी ई.पू. के आरम्भ से लेकर सातवीं शताब्दी ई.पू. के अन्त के दौरान लिखी गई, और दानिय्येल की पुस्तक छठी शताब्दी ई. पू. में लिखी गई थी। तुलनात्मक रूप से, इब्राहीम के बुलाए जाने के समय से अधिक देर बार, परमेश्वर मरे हुए लोगों के शारीरिक पुनरुत्थान के बारे में भविष्यवाणी के द्वारा बातें करने लगा था जो कि बहुत से लोगों के लिए एक बड़ी आशीष होनी थी। इस महान दृश्य के खुलने से, परमेश्वर के लिए *आत्मिक* पिता के रूप में अपनी भूमिका निभाने का समय आ गया।

प्रकाशन का विकास

हम परमेश्वर को अनादि पिता (परमेश्वरत्व में), विश्वव्यापी पिता (सृष्टि में), और चयनात्मक पिता (प्रतिज्ञा/वाचा में) के रूप में देख चुके हैं। हम देख चुके हैं कि उसकी विश्वव्यापी पिता की भूमिका कैसे चयनात्मक पिता की भूमिका से ऊपर है, और हमने संक्षेप में वर्णन किया था कि उसकी आत्मिक पिता की भूमिका चयनात्मक पिता से ऊपर कैसे है। अब हम आत्मिक पिता के रूप में परमेश्वर के अधिक विस्तृत अध्ययन की ओर लौटते हैं।

बेशक ऐतिहासिक युगों में परमेश्वर की योजना थोड़ा-थोड़ा करके प्रकट की गई, वास्तव में यह इतिहास के मंच पर प्रस्तुत की गई एक महान योजना है। रिले रेस (चौकी दौड़) एक अच्छा उदाहरण है। रिले रेस है तो एक दौड़, परन्तु इसमें प्रत्येक खण्ड में कुछ ''बढ़ौतरी होती है'' जिसमें एक धावक टीम के अगले सदस्य को एक डण्डा पकड़ाता है। इसी प्रकार, अपने तीनों व्यक्तियों में परमेश्वर अपनी महान योजना के सभी चरणों में शामिल था। हम इस योजना में *परमेश्वर पिता* की मुख्य भूमिका पर ज़ोर देते आ रहे हैं, परन्तु यह ज़ोर देने का अर्थ उसकी सम्पूर्णता में परमेश्वर के कार्य को कम करना नहीं है।

हमें परमेश्वर के प्रगतिशील प्रकाशन से अपने अध्ययन में बहुत बड़ी सहायता मिलती है। पुनरुत्थान के विषय को समझने के लिए पहले भी इसने हमारी सहायता की है। स्पष्टत:, इसके प्रारम्भिक विकास में मृत्यु के पश्चात जीवन के विचार में ज़रूरी नहीं कि शारीरिक पुनरुत्थान भी शामिल हो। ऐसा उस अनिश्चितता से भी लगता है जो पुराने नियम में ''शियोल'' शब्द के उपयोग में रहती है।[4] परन्तु हम यशायाह और दानिय्येल की भविष्यवाणी की पुस्तकों में, मृतकों की शारीरिक पुनरुत्थान की पुष्टि करते हुए स्पष्ट कथन देख चुके हैं। यह बढ़ती हुई जागरूकता यशायाह या दानिय्येल के बुद्धिमान होने के कारण नहीं थी। उन्हें तो परमेश्वर के भविष्यवक्ता होने के कारण उसका प्रकाशन मिला था।

परमेश्वर का प्रगतिशील प्रकाशन एक और तरह से होता है जो हमारे अध्ययन के लिए उपयुक्त है। मूसा को लोगों से परमेश्वर की बातें कहते हुए ''एक नबी'' कहने की बात पर ध्यान दें:

> तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से, अर्थात तेरे भाइयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तू उसी की सुनना; ... सो मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूंगा; और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा; और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उनको कह सुनाएगा। और जो मनुष्य मेरे उस वचन को जो वह मेरे नाम से कहेगा ग्रहण न करेगा, तो मैं उसका हिसाब उन से लूंगा (व्यवस्थाविवरण 18:15-19)।

अपने संदर्भ में यह पद मूसा, यशायाह, यहेजकेल और आमोस जैसे कई सदियों तक रहने वाले अपने सेवकों, भविष्यवक्ताओं द्वारा कहे गए परमेश्वर के अधिकारपूर्ण स्वर को कहा गया लगता है। परन्तु परमेश्वर के प्रगतिशील प्रकाशन से, नये नियम में हम पाते हैं कि इस भविष्यवाणी में एक अतिरिक्त अर्थ था जिसने उचित समय पर दृष्टिगोचर होना था। ''इस्राएल के पुरुषों'' के जनसमूह को पतरस ने समझाया था कि मूसा ने यीशु अर्थात मसायाह के अधिकारपूर्ण नबी अर्थात भविष्यवक्ता के उत्पन्न होने की बात कही थी।[5]

बाइबल में मिलने वाले प्रगतिशील प्रकाशन के इन दो उदाहरणों को लेने का हमारे अध्ययन में प्रत्यक्ष लाभ है। पहला, हम देखते हैं कि आरम्भ से ही परमेश्वर ने हमारे लिए एक योजना बनाई थी। परमेश्वर का यह थोड़ा-थोड़ा करके आवश्यकता के अनुसार निर्णय लेना नहीं था। दूसरा, हम धन्यवाद करते हैं कि हम परमेश्वर की पूरी योजना के अद्भुत ढंग से प्रकट होने को देख सकते हैं क्योंकि हम पर यह उसके वचन में प्रकट की गई है।

संसार में यीशु अर्थात मसायाह के आने की बात काफी प्रसिद्ध थी। मूसा ने उसे आधिकारिक व्यक्ति कहा था। मसीह से सम्बन्धित पद पुराने नियम में अक्सर मिलते हैं।[6] ''मसायाह'' शब्द (इब्रा.: *mashiah* [*मशायाह*]; यू.: *Christos* [*ख्रिस्तोस*])का अर्थ है ''अभिषिक्त।''[7]

भजन लिखने वाले ने परमेश्वर द्वारा इस्राएल के राजा को ''आनन्द के तेल'' से अभिषेक करने की बात की थी:

> हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा;
> तेरा राजदण्ड न्याय का है।
> तू ने धर्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है।
> इस कारण परमेश्वर ने हां तेरे परमेश्वर ने
> तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से
> अभिषेक किया है
> (भजन संहिता 45:6, 7)।

प्रगतिशील प्रकाशन के द्वारा, हमें पता चलता है कि यह पद परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र को मसायाह के रूप में चुने जाने के संकेत के लिए इस्तेमाल किया गया है (इब्रानियों 1:8,9)।

पिता ने अपने पुत्र को क्या करने के लिए चुना या ''अभिषेक किया''? इस प्रश्न का उत्तर अब तक के सबसे शानदार वक्तव्यों में से एक है। यूहन्ना 3:16, 17 में, हमें इसका उत्तर मिलता है:

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

1 तीमुथियुस 1:15 में पौलुस ने हमें बताया है कि ''यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूं।''

क्या आपने कभी छुटकारे की परमेश्वर की योजना की जटिलता पर विचार किया है? क्या आप कभी हैरान हुए हैं कि जब मनुष्य ने पाप किया तो उसने उसे खत्म क्यों नहीं कर दिया या उसने मनुष्य को पाप करने से रोका क्यों नहीं? इतने युगों से उसकी योजना को लोग क्यों नहीं मान रहे हैं? यह सुझाव देना उपहासजनक लगता है कि इन प्रश्नों में जिन कठिनाइयों का सुझाव दिया गया है वे परमेश्वर और मनुष्यजाति के स्वभाव के कारण ही उत्पन्न हुई हैं परन्तु है यह सत्य।

आइए परमेश्वर और मनुष्य जाति के सम्बन्ध में हुए कुछ बड़े विकासों पर ध्यान देते हैं। परमेश्वर प्रेम करने वाला, पवित्र, धर्मी, अनुग्रह करने वाला और क्षमा करने वाला है। उसकी मानवीय रचना परमेश्वर की तरह ही शुद्ध और पवित्र बनाई गई थी। पुरुष और स्त्री को बनाना परमेश्वर के प्रेम का एक कार्य था, और प्रेम बदले में प्रेम ही मांगता है दबाव से नहीं बल्कि प्रेम के बदले में प्रेम। मनुष्यों द्वारा परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण करने के लिए उनके पास एक विकल्प था। वे परमेश्वर की इच्छा से प्रेम करके उसे प्रसन्नतापूर्वक मान सकते थे; वरना उनका सम्बन्ध प्रेमपूर्वक या भक्तिवाला नहीं होना था। परमेश्वर की पसन्द चुनने के बजाय अपने आपको संतुष्ट करने का निर्णय लेकर उन्होंने गलत किया था। इससे परमेश्वर के पवित्र और पाप रहित होने के कारण परमेश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध बिगड़ गया था।

अपने प्रेमी स्वभाव के कारण, परमेश्वर उन ''जुदा होने वालों'' को प्रेम के परस्पर सम्बन्ध में फिर से लाने के लिए स्वयं उनके पास गया। परन्तु इसमें बहुत सी जटिलताएं थीं। परमेश्वर उन्हें पापी होने की स्थिति में ग्रहण नहीं कर सकता था, क्योंकि वह पूर्णतया पवित्र है। पूर्ण शुद्धता का अशुद्धता से कोई मेल नहीं हो सकता। परमेश्वर उनके पापों को ऐसे ही क्षमा नहीं कर सकता था क्योंकि वह पूर्णतया धर्मी है। पाप का दाम चुकाना पड़ता है। न्याय की यही मांग है।

सर्वज्ञ परमेश्वर की बुद्धि बहुत जटिल लगने वाली इस दुविधा के उसके समाधान में

देखी जाती है। यह बाइबल के पन्नों को खोलकर हज़ारों वर्षों तक फैला देती है। अपने अध्ययन में हम उसे विशेष लोगों को बुलाते हुए देख चुके हैं जिनके द्वारा सब जातियों को आशीष मिलनी थी। उन लोगों को मूर्तिपूजा से परमेश्वर की ओर लौटते, उसके प्रेम को परखते और उसे नियमों का उल्लंघन करते देखकर हम अचम्भित हुए थे। वह उन्हें अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा वापस बुलाता रहा है। उनके द्वारा वह उन्हें मसायाह के आने का स्मरण कराता रहा जिसने सब लोगों को आशीष देनी थी।

परमेश्वर अन्तिम समाधान के लिए मार्ग तैयार कर रहा था। यह कोई आसान समाधान नहीं था, परन्तु केवल *यही* एकमात्र समाधान था जिससे पूर्णतया पवित्र, धर्मी व प्रेमी परमेश्वर के किसी गुण का उल्लंघन नहीं होना था। *केवल* उसका ही समाधान ऐसा था जिससे मनुष्य शुद्ध अवस्था अर्थात पवित्रता में उससे मेल कर सकते थे।

हम देख चुके हैं कि चयनात्मक पिता के रूप में परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों को बहुत सी आशिषें देने की बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं की थीं। भविष्यवाणी की भाषा में उसने एक मसायाह के बारे में बताया जिसने अन्ततः इब्राहीम के वंश में से आना था, जिसके द्वारा सब जातियों को आशीष मिलनी थी। इसलिए यह स्पष्ट है कि अपने साथ मनुष्य जाति को मिलाने के अपने प्रयास में परमेश्वर ने अपने लिए एक और भूमिका की योजना बनाई हुई थी। हम जानते हैं कि सृष्टि की रचना में विश्वव्यापी पिता के रूप में उद्धार के लिए परमेश्वर की भूमिका पर्याप्त नहीं थी, क्योंकि वह उस समय के लिए मार्ग तैयार करने के लिए उन लोगों का चयनात्मक पिता बन गया था। जब सारी मनुष्यजाति को उद्धार की आशिषें उपलब्ध होनी थीं। इसलिए न तो विश्वव्यापी पिता के रूप में उसके काम और न ही चयनात्मक पिता के रूप में उसका अन्तिम समाधान होना था।

उद्धार की योजना

परमेश्वर का अन्तिम समाधान एक ऐतिहासिक वास्तविकता बन गया, जब उसने आत्मिक पिता के रूप में, सारी मनुष्य जाति के पापों के लिए शुद्ध, अमूल्य, सिद्ध बलिदान के रूप में अपने पुत्र को भेंट कर दिया था। इस बलिदान पर चर्चा करना कठिन है। इसमें इतने गुण हैं कि हम उनकी व्यापकता का वर्णन नहीं कर सकते। यह उस प्रेम को दिखाता है जिसकी थाह को मापा नहीं जा सकता। यह मनुष्य की तुलना में जो पाप को व्यक्तित्व की त्रुटि के रूप में देखता है परमेश्वर की नज़र से पाप की शक्ति और आतंक को दिखाता है। यह हमें परमेश्वर के अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य होने के दृढ़ निश्चय से प्रभावित करता है। यह किसी तरह अपने पाप से निकलने के हमारे अहं को समाप्त कर देता है। यह हमें एक पिता की ईमानदारी से स्तब्ध करता है जो अपने पुत्र को बलिदान के रूप में भेंट करता है ताकि वह पवित्र और धर्मी रहकर भी उसे ग्रहण करने वालों और उसके पुत्र के सामने अपने आपको समर्पित करने वालों के पाप क्षमा कर सके।

आत्मिक पिता के अपने पुत्र के साथ इतने घनिष्ट सम्बन्ध की बात पवित्र शास्त्र में बड़े विस्तार से बताई गई है। हम पढ़ते हैं कि ''जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र

को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले'' (गलतियों 4:4, 5)। मरियम नाम की कुंवारी से यीशु के अविश्वसनीय जन्म के द्वारा ही परमेश्वर के पुत्र का ''स्त्री से जन्म'' होना था। स्वर्गदूत द्वारा मरियम को बताया गया था, ''कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा'' (लूका 1:35)।[8]

यीशु का मूसा की व्यवस्था के प्रभावी होने के समय केवल जन्म ही नहीं हुआ था बल्कि वह जीवनभर मूसा की व्यवस्था के अधीन ही रहा था। परन्तु, अपनी बलिदानी मृत्यु में, उसने ''विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उस क्रूस पर कीलों से जड़कर साम्हने से हटा दिया है'' (कुलुस्सियों 2:14; देखिए इब्रानियों 10:5-10)।

मसीह का बलिदान केवल पुरानी व्यवस्था का पूरा होना ही नहीं, बल्कि यह उनके लिए छुटकारे का साधन भी था जो विश्वास योग्य होकर इसमें जीवन बिता रहे थे। हम पढ़ते हैं:

> और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें (इब्रानियों 9:15)।

और, यह भेंट इसलिए भी दी गई थी, ''कि हमें पुत्र होने के पूरे अधिकार मिल सकें'' (इब्रानियों 12:7-11)।

यीशु के सांसारिक जीवन का अध्ययन करते हुए, हम अपने स्वर्गीय पिता के साथ उसके घनिष्ट सम्बन्ध से प्रभावित होते हैं। जब वह बालक ही था, तब भी वह जानता था कि उसे अपने पिता के काम में लगे रहना आवश्यक है (लूका 2:29)। बपतिस्मा लेकर यीशु द्वारा अपनी व्यक्तिगत सेवकाई का आरम्भ करने के समय, उसका पिता उसे बड़े ध्यान से देख रहा था। उसने अपने पुत्र के लिए अपने प्रेम और उसमें अपने आनन्द की घोषणा की थी (मत्ती 3:17)। यीशु के रूपान्तरण के समय उसके पिता की आवाज़ ने पुनः ज़ोर देकर अपने पुत्र के लिए अपने प्रेम और उसमें अपने आनन्द को यह ज़ोर देकर कहा था कि ''इसकी सुनो'' (मत्ती 17:5)।

यीशु की प्रार्थनाओं से हमें उसके अपने पिता के साथ घनिष्ट सम्बन्ध का पता चलता है। उसकी सबसे बड़ी प्रार्थना सृष्टि की रचना से पहले पिता के साथ उसकी महिमामय उपस्थिति को दिखाती है और यह भी कि पृथ्वी पर उसने पिता की महिमा कैसे की थी। उसने उस अनन्त प्रेम के बारे में भी बात की जो उसका पिता उससे रखता था और उस प्रेम को अपने अनुयायियों में भी होने की अपनी इच्छा की थी (यूहन्ना 17; ध्यान दें पद 5,24,26)। यीशु ने अपने गहन अनुभवों में अपने पिता की इच्छा को पूरा होने की प्रार्थना की। क्रूस पर मृत्यु के निकट पहुंचकर, उसने प्रार्थना की, ''हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो

यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो'' (मत्ती 26:39)। क्रूस पर लटके हुए, उसने प्रार्थना की, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं?'' फिर मरते हुए, उसके अन्तिम शब्द थे ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं'' (लूका 23:34, 46)। हमें समझ आती है कि परमेश्वर सचमुच यीशु मसीह का आत्मिक पिता था।

यद्यपि यीशु ने मूसा की पुरानी वाचा (व्यवस्था) को पूरा किया और अपनी मृत्यु के द्वारा एक नया नियम स्थापित किया, परन्तु वह पुरानी वाचा के अधीन ही जीया और मरा। इसका अर्थ है कि दाऊद की मानवीय राजसी वंशावली के एक यहूदी के रूप में (लूका 3:23-31), जिसे ''इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया'' (मत्ती 15:24) था, वह अपने ही लोगों को सिखा रहा था और उनमें प्रचार कर रहा था जो मूसा की व्यवस्था के अधीन थे। (कभी-कभी, यीशु अपने पास आने वाले अन्यजातियों को भी ग्रहण करता था [उदाहरणार्थ, मत्ती 15:21-28]।) इसलिए पिता के बारे में उसकी अधिकतर शिक्षाएं उन लोगों के लिए थीं जो परमेश्वर को चयनात्मक पिता के रूप में जानते थे। उसने उन में कई बार परमेश्वर को ''तुम्हारा पिता'' कहकर सम्बोधित किया था (मत्ती 5:16, 45, 48; 10:29)।

जैसे कि हमने देखा है, परमेश्वर पाप में डूबी मनुष्य जाति के साथ अपने व्यवहार में एक अधिक व्यापक युग को सामने ला रहा था। *हर किसी* के लिए उसके पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा आत्मिक पिता के रूप में परमेश्वर को जानने का समय ''पूरी तरह से आ'' चुका था। इसलिए यह जानकर आश्चर्य नहीं होता कि यीशु ने अपने चेलों को उनके लिए अपने पिता की इच्छा और उस इच्छा को पूरा करने का महत्व बताया (मत्ती 7:21)। उसने ज़ोर देकर कहा कि पिता के रूप में परमेश्वर के साथ और भाई के रूप में उसके साथ पारिवारिक सम्बन्ध के लिए पिता की यह आज्ञाकारिता आवश्यक है (मत्ती 12:48-50)। पिता घुसपैठियों को इस पारिवारिक दायरे को तोड़ने की अनुमति नहीं देगा (मत्ती 15:13)।

यीशु ने परमेश्वर को कई बार अपना पिता कहा। उसने विशेष सम्बन्धवाचक सर्वनाम ''*मेरा* पिता'' के साथ अपने अनुयायियों में इस बात पर ज़ोर दिया (मत्ती 18:35; 20:23)। उसने उन्हें यह भी सिखाया, ''जो कोई मुनष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा'' (मत्ती 10:32, 33)। इस प्रकार की शिक्षाओं, जो कि बहुत सी थीं, से उसके चेलों को, विशेषकर उसके प्रेरितों को चौकस हो जाना चाहिए था, कि अपने पिता के रूप में परमेश्वर के बारे में उसका बताना अवश्य ही एक अलग बात थी।

आरम्भ से ही, यीशु की माता, मरियम ''इस भेद'' को जानती थी। वह उसके परमेश्वर की ओर से होने के विषय में जानती थी। निश्चय ही वह उसके चमत्कारी जन्म के *तथ्य* को जानती थी। उसका पति यूसुफ, जो एक धर्मी पुरुष था, मरियम के गर्भ के बारे में बहुत ही सावधान था। इसके अतिरिक्त, यीशु की युवावस्था में, मरियम ने उसे यूसुफ का नाम लिए बिना अपने पिता की बातें करते हुए सुना था। ''और उसकी माता ने ये सब बातें अपने मन

में रखीं'' (मत्ती 1:18-25; लूका 1:26-38; 2:41-52)।

शायद यीशु के अनुयायियों ने अपने पिता के बीच उसके विलक्षण सम्बन्ध को समझ लिया था। परन्तु ऐसा लगता है कि उन्हें यह समझ बहुत धीरे-धीरे आई थी। आखिर, क्या परमेश्वर उनका भी पिता नहीं था? क्या परमेश्वर ने इस्राएल को अपना पुत्र नहीं कहा था (यिर्मयाह 31:9)। क्या यीशु ने जैसे सिखाया था वैसे परमेश्वर को वे ''अपना पिता'' कह सकते थे? (मत्ती 6:9से)। हां, वे कह सकते थे, और उन्होंने कहा भी।

हमने इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर को अपने पिता के रूप में देखने के बारे में पुराने नियम का अध्ययन किया है। हम यह भी जानते हैं कि यीशु के समय के यहूदी-धर्म में पिता के रूप में परमेश्वर की सुपरिचित धारणा मिलती थी।

परन्तु यहूदियों के लिए परमेश्वर के साथ यीशु के विलक्षण पिता/पुत्र सम्बन्ध का पूरा प्रभाव समझ पाना कठिन था। उन्हें कैसे पता चल सकता था कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु, उन सबसे अलग है जिन्हें ''परमेश्वर के पुत्र'' कहा जाता था? क्या उससे पहले के महान अगुओं को उसके पुत्र नहीं कहा जाता था? (2 शमूएल 7:14; भजन 89:26, 27)। हां। फिर तो हमें यह जानकर हैरान नहीं होना चाहिए कि उनके लिए ''पूर्ण सत्य'' को जानने के लिए आत्मिक पिता परमेश्वर की ओर से प्रकाशन के बिना ऐसा नहीं हो सकता था।

परमेश्वर की ओर से भेजे गए स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया था कि कुंवारी मरियम एक बालक को जन्म देगी: ''क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा'' (मत्ती 1:20ख, 21)। इस प्रकार यशायाह की भविष्यवाणी परोक्ष रूप से पूरी हुई: ''कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिसका अर्थ यह है 'परमेश्वर हमारे साथ' '' (मत्ती 1:22, 23; यशायाह 7:14)। संसार में यीशु का जन्म आश्चर्यकर्म से हुआ था और उसे परमेश्वर के रूप में स्पष्ट मान्यता मिलनी थी! जैसा कि हम कह चुके हैं, उस समय मरियम ने बहुत सी बातें अपने मन में रखीं था।

यदि हम इस सब को उतनी ही गम्भीरता से लें जितनी गम्भीरता से इसे हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है तो हम जान जाएंगे कि यह कितनी बड़ी बात है। संसार का इतिहास अपनी दिशा बदल रहा था। समय बदल रहे थे। एक नया और शानदार युग आने वाला था। मात्र मनुष्य के लिए ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं का सम्बन्ध बनाना कठिन है। यह कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है कि इतिहास में यीशु के प्रवेश के लिए ईश्वरीय व्याख्या की आवश्यकता थी। इसकी समझ चाहे धीरे-धीरे ही आई। आखिर, यीशु के पृथ्वी पर अपने महान कार्य के लिए आने के समय उसके पहचानने का संघर्ष करने वाले लोगों को हमारी तरह इन अद्भुत सच्चाइयों को परखने के लिए मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के द्वारा लिखी सुसमाचार की पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य नहीं मिला था।

परन्तु, *हम* पढ़ सकते हैं कि पिता अपने पुत्र के सच्चे *स्वभाव* को प्रकट करने पर अटल था। उदाहरण के लिए, नतनएल के शब्दों में यीशु के बारे में बताने में सच्चाई *है:* ''हे

रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है'' (यूहन्ना 1:49)। यीशु ने उसकी निष्कपटता की सराहना की, परन्तु क्या उसके शब्दों में समयों की यहूदी मानसिकता की पुरानी राष्ट्रीयता की गंध नहीं है ? क्या नतनएल ऐसे प्रभावों से मुक्त था ?

यहूदी लोग एक राष्ट्रीय जागृति और एक राजा के शानदार शासन की प्रतीक्षा में थे जिसे वे परमेश्वर के अभिषिक्त, चुने हुए पुत्र के रूप में देख सकें, जैसे दाऊद और सुलैमान के शासन के दौरान उनके पूर्वज आनन्दित थे। यहूदी लोग यीशु को राजा के रूप में देखना चाहते थे (यूहन्ना 6:15)।

एक अवसर पर मृत्यु पर यीशु की सामर्थ से उसके देखने वालों पर एक शानदार प्रभाव पड़ा। वे कहने लगे ''कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यवक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है'' (लूका 7:16)। उनके भयभीत हो जाने से यह एक बहुत बड़ी घोषणा थी, परन्तु क्या इस प्रशन्सा से उन्होंने यीशु को *परमेश्वर* के रूप में माना ? हमें याद रखना होगा कि इस्राएलियों ने परमेश्वर के स्वयं देहधारी हुए बिना, परमेश्वर को उसकी बातों या उसके कामों से अपने बीच में देखा था।[९] जब यीशु ने अपनी ईश्वरीयता की साफ पुष्टि की, तो धार्मिक अगुओं की ओर से इसे बेतुका मानकर उसका अपमान और सताव दिया गया (8:42-59)।

एक समझदार व्यक्ति, निकुदेमुस ने निश्चय ही यह कहकर यीशु की प्रशन्सा की, ''हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता'' (यूहन्ना 3:2)। एक ''शिक्षक'' का दूसरे ''शिक्षक'' के रूप में निकुदेमुस ने यीशु द्वारा दिखाए ''चिह्नों'' में परमेश्वर की सामर्थ और आशीष का प्रमाण देखा। क्या निकुदेमुस को कुछ और भी दिखाई दिया ? *पता* नहीं। परन्तु, हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने पुत्र के *सच्चे स्वभाव* को प्रकट करने की तैयारी कर रहा था। परमेश्वर का विकासशील प्रकाशन आगे बढ़ता रहा।

यीशु के प्रश्न के उत्तर में, पतरस ने एक उल्लेखनीय अंगीकार किया ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (मत्ती 16:16)। क्या यह अंगीकार उनसे महत्वूपर्ण था जिनका उल्लेख पहले किया गया था ? हम जानते हैं कि यह अंगीकार निर्णायक था। पहली बात कि यह यीशु के प्रश्न का सीधा उत्तर था। दूसरा, हमें बताया गया है कि पतरस यह अंगीकार इसलिए कर पाया क्योंकि यह यीशु के स्वर्गीय पिता की ओर से एक *प्रकाशन* था (मत्ती 16:17)। यीशु के सम्पूर्ण परिचय का सत्य इस अंगीकार में अंतर्निहित था।

इसे मानने के हमारे पास कुछ कारण हैं कि पतरस इस अंगीकार के पूर्ण अर्थ से स्वयं भी अनभिज्ञ था। इस अंगीकार के थोड़ी देर बाद हम पाते हैं कि वह यीशु को अपनी मृत्यु, और दुख सहने की बात करने पर डांट रहा है ! (मत्ती 16:21-23)। हम यह भी जानते हैं कि पतरस के लिए वक्तव्य देना जिसकी उसे समझ नहीं होती थी, चाहे आत्मा की प्रेरणा से हो कोई नई बात नहीं थी (प्रेरितों 2:39; 10:28-34)। हम जानते हैं कि पतरस उत्तेजक होकर जल्दबाज़ी में बोल देता था (मत्ती 17:4, 5; मरकुस 9:5, 6; लूका 9:33)। अपने

प्रभु के प्रति पूर्ण वफादारी के समय भी पतरस मन को छू लेने वाली ऐसी बात कह पाया था जिस पर दबाव पड़ने पर वह स्थिर न रहा था (मत्ती 26:33-35, 69-75)। इसलिए हम निष्कर्ष निकालते हैं कि हो सकता है कि पतरस ने अपने प्रशंसनीय और सच्चे अंगीकार के पूरे महत्व को न समझा हो कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।

हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान तक किसी मनुष्य के होंठों से उसे *इमानुएल* नहीं कहा गया था। कितने आश्चर्य की बात है कि हिला देने वाली यह सच्चाई उसी व्यक्ति के मुख से निकली थी जो पहले संदेह करता था! थोमा ने यीशु की सामर्थ देखी थी। उसने उसकी अद्वितीय शिक्षाएं सुनी थीं। उसे उसके सिद्ध, धर्मी जीवन को देखने का सौभाग्य प्राप्त था। उसने निराशा में डूबे लोगों के प्रति उसकी गहरी दया देखी थी। शायद उसने यीशु को अपने बारे में यह कहते हुए भी सुना था कि ''मैं हूं'' (यूहन्ना 8:58)।

सम्भव है कि थोमा के मन में यह सब उस समय आया जब वह जी उठे यीशु के सामने खड़ा था। जो कुछ उसने देखा वह किसी वक्तव्य में, शिक्षा या प्रस्ताव पर विचार नहीं था। उसने यीशु की देह में क्रूस के दाग देखे थे। वह जानता था कि वह पुनरुत्थान को देख रहा है और वह यह भी जानता था कि परमेश्वर को छोड़ किसी और के पास मृत्यु पर विजय पाने की शक्ति नहीं है। इसीलिए, ''थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे *परमेश्वर*!'' (यूहन्ना 20:28)।

अन्त में *परमेश्वर* ने, जो आत्मिक पिता है, यह सब स्पष्ट कर दिया है। यीशु नासरी उसका आत्मिक पुत्र अर्थात देह में *ईश्वर* है!

पाद टिप्पणियां

[1]देखिए उत्पत्ति 12:1-3; 13:14-17; 14:13; 15:1-6, 13-16; 17:1-4. [2]*कमैन्ट्री ऑन द होली स्क्रिप्चर्स: क्रिटिकल डॉक्ट्रिनल एण्ड होमिलिटिकल,* अनु. और सं. फिलिप्प शैफ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: ज़ॉन्डर्डवन, पृ.न.), 475 में जॉन पीटर लेंज, ''सैमुएल।'' [3]''अर्थात, सबसे स्पष्ट संरचना के द्वारा, मैं मुर्दों में से जी उठकर उसकी महिमा में प्रवेश करूंगा और मृत्यु का मुझ पर कोई वश न होगा।'' एडम क्लार्क, *द होली बाइबल विद ए कमैन्ट्री एण्ड क्रिटिकल नोट्स,* vol. 3, साम्ज़ [नैशविल्ले: अबिंगडन, पृ.न.], 377)। [4]*शियोल* ''मृतकों का स्थान'' है। मेरिल एफ. अंगेर और विलियम वाइट, जूनियर सं., *वाइन'ज़ कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेन्ट वर्डस* (नैशविल्ले: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1985), s.v. ''डैथ।'' [5]प्रेरितों 3:17-23. तु. रॉबर्ट जेमियसन, ए. आर. फॉसेट, और डेविड ब्राउन, *कमैन्ट्री क्रिटिकल एण्ड एक्सपलेनेटरी ऑन द होल बाइबल,* vol. 2, (ग्रैंड रेपिड्स, मिशी.: ज़ॉन्डर्वन, पृ.न.), 176-77. [6]हमने उन बहुत से अध्यायों का उल्लेख नहीं किया है जिनमें मसायाह से सम्बन्धित हवाले मिल सकते हैं। और अध्ययन के लिए ये कुछ हवाले दिए गए हैं: भजन 2; 16; 22; 110; यशायाह 2; 7; 40; 53; यशायाह 23; मलाकी 3; 4. [7]अभिषेक करने की प्रक्रिया का महत्व तब दिखाई देता है जब हम राजाओं को चुनने की प्राचीन प्रथा के विषय में पढ़ते हैं। उदाहरण के लिए, शमूएल ने परमेश्वर द्वारा शाऊल को इस्राएल का राजा चुनने का संकेत दिया जब उसने ''एक कुप्पी तेल लेकर उसके सिर पर उंडेला और उसे चूमकर कहा,

क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है ?'' (1 शमूएल 10:1)। इसलिए, जब हम परमेश्वर के ''अभिषिक्त'' के बारे में पढ़ते हैं, तो हम परमेश्वर के ''चुने हुए'' के बारे में पढ़ रहे होते हैं। [8]पूरे संदर्भ के लिए लूका 1:26-37 पढ़ें। [9]1 राजा 17:22-24; 2 राजा 4:32-36; यिर्मयाह 29:10. और, लूका 7:16 के सम्बन्ध में, देखिए एच. लियो बोलस, *ए कमैन्ट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ लूक* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट पब्लिशिंग कं., 1940; रीप्रिंट 1959),151. बोलस ने कहा, ''एक बार उन्होंने एलिय्याह और एलिशा को याद करके घोषणा की कि 'हमारे बीच' इनके जैसा एक महान भविष्यवक्ता उठ खड़ा हुआ था, और परमेश्वर अपने लोगों के पास एक भविष्यवक्ता के साथ पुन: आया था।''